||नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्त||
छत्रपती शिवाजी शिक्षण मंडळाचे

Arts & Commerce College Vaduj

Tal. Khatav Dist. Satara

Department : हिंदी

Subject : हिंदी साहित्य का इतिहास

Name : जाधव रेशमा यशवंत
रोल नं. 521
मार्गदर्शक :- घुमाळ, के वाय.

बी.ए. भाग : 3

08/10

Arts & Commerce College Vaduj
Year 2016-17

Subject.. Date ....

Note / Remarks..

बिहारीलाल परिचय

SARVESH

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Subject.................................... Date ....

Note / Remarks....................................

प्रस्तावना।

बिहारीलाल का जन्म १५९५ के आस पास ग्वालियर में हुआ। वे जाति के माथुर चौबे थे। उनके पिता का नाम केशवराय था। जब बिहारी ४ वर्ष के थे तब इनके पिता इन्हे ओरछा ले आये तथा उनका बचपन बुंदेलखंड में बीता। इनके गुरु केशवदास के और युवावस्था ससुराल मथुरा में व्यतीत हुए ~~जैसे~~ की निम्न दोहे से प्रकट है।

जन्म ग्वालियर जानिये खंड
बुंदेले बाल। तरुनाई आये सुघर
मथुरा बसि ससुराल ॥

जयपुर-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह अपनी नयी रानी के प्रेम में इतने डूबे रहते थे कि वे महल से बाहर भी नहीं निकलते थे और राज-काज की ओर ध्यान नही देते थे।

नहि पराग नहि मधुर मधु,
नहि विकास यहि काल।
अलि कली ही सा बिंध्यो
आगे कौन हवाल ॥

बिहारी जयपुर नरेश के दरबार में रहकर काव्य-रचना करने लगे वहाँ उन्हे पर्याप्त धन और

SARVESH

Subject.
Note / Remarks.

यश मिला। 1664 में उनकी मृत्यु हो गयी।

कृतियाँ।

बिहारी की एकमात्र रचना सतसई है। यह मुक्तक काव्य है। इसमें 713 दोहे संकलित है। कतिपय दोहे संदिग्ध भी माने जाते हैं। सभी दोहे सुंदर और सराहनीय हैं तथापि तनिक विचारपूर्वक बारीकी से देखने पर लगभग 200 दोहे अति उत्कृष्ट ठहरते हैं। सतसई में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

सतसई को तीन मुख्य भागों में विभक्त कर सकते हैं। नीति विषयक भक्ति और अध्यात्म भावपरक तथा शृंगार परक इनमें से शृंगारात्मक भाग अधिक है। कला चमत्कार सर्वत्र चातुर्य के साथ प्राप्त होता है।

शृंगारात्मक भाग में रूपांग सौंदर्य सौंदर्यविकरण, नायक नायिका भेद तथा हाव-भाव, विलास का कथन किया गया है। नायक - नायिका निरूपण भी मुख्यतः तीन रूपों में मिलता है - प्रथम रूप में नायक कृष्ण और नायिका राधा है। इनका चित्रण करते हुए धार्मिक और दार्शनिक विचार को ध्यान में रखा गया है इसलिए इसमें गूढार्थ व्यंजना प्रधान है और आध्यात्मिक रहस्य तथा धर्ममर्म

SARVESH

Subject...
Note / Remarks...
Date ...

टीकाएँ

सतसई पर अनेक कवियों और लेखकों ने टीकाएँ लिखी। कुल ५४ टीकाएँ मुख्य रूप से प्राप्त हुये हैं। रत्नाकर की टीका की है कि याचक प्रकार से अंतिम टीका है : यह सर्वांग-सुंदर की। सतसय के अनुवाद भी संस्कृत उर्दू (फारसी) आदि छंदों को स्पष्ट करते हुए कुंडलिया आदि में हुए हैं और कतिपय कवियों ने सतसय के दोहा को स्पष्ट करते हुए कुंडलिया आदि छंदों के द्वारा विस्तृत किया है। अन्य पूर्ववर्ती कवियों के साथ भावसाम्य भी प्रकट किया गया है।

सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर,
देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर।
बिहारी की बलागत और ब्रजभाषा की शीरीनी, हमें तारीफ करने के लिए मजबूर करती है।

इस प्रकार की कितनी ही उक्तियाँ प्रचलित है। विस्तृत रूप में सतसई पर आलोचनात्मक पुस्तके भी प्रचुर कये लिखी गये हैं। साथ ही आधुनिक काल में इसकी कई टीकाएँ भी प्रकाशित हुए ये हैं। इनकी तुलना विशेष रूप से कवि का देव से की गये और एक और देव को

SARVESH

Subject.......................
Note / Remarks.......................
Date ....

दो पुस्तके देव और बिहारी पं कृष्ण। बिहारी मिश्र लिखित तथा बिहारी और देवता या भगवान दीन लिखित अवलोकनीय है। रत्नाकर जी के द्वारा संपादित बिहारी रत्नाकर नामक टीका और कविवर बिहारी नामक आलोचनात्मक विवेचन विशेष रूप में अवलोकनीय और प्रामाणिक है।

काव्यगत विशेषताएँ

बिहारी की कविता का मुख्य विषय श्रृंगार है। उन्होंने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का वर्णन किया है। संयोग पक्ष में बिहारी ने हावभाव और अनुभवों का बड़ा ही सूक्ष्म चित्रण किया है। उसमें बड़ी मार्मिकता है। संयोग का एक उदाहरण देखिए -

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय। सौंह करे, भौंहनु हँसे देन कहे नटि जाय॥

बिहारी का वियोग वर्णन बड़ा अतिशयोक्ति पूर्ण है, यही कारण है कि उसमें स्वाभाविकता नहीं है विरह में व्याकुल नायिका की दुर्बलता का चित्रण करते हुए उसे घड़ी के पेंडुलम जैसा बना दिया गया है।

SARVESH

इति आवत चली जात उत चली छहसातक
हाथा।
चढी हिंडोरै सी रहे लगी उसासनु साथ।

सूफी कवियों की महात्मक पद्धति का भी बिहारी पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। वियोग की आग से नायिका का शरीर इतना गर्म है कि उस पर डाला गया गुलाब जल बिच में ही सूख जाता है।

औंधाये सी सी सुलाये बिरह बिमा
बिलसाथ
बीचहि सूखि गुलाब गो छीटी छुयो
न गात।।

भक्तिभावना

बिहारी मूलतः शृंगारी कवि है। उनकी भक्ति भावना राधा-कृष्ण के प्रति है और वह जहाँ तहाँ ही प्रकट हुये है। सतसई के आरंभ में मंगला चरण का यह दोहा राधा के प्रति उनके भक्ति भाव का ही परिचायक है।

मेरी भाव बाधा हरो राधा नागरि सोय
जा तन की साव पर स्याम हरित डुति
होय

Subject.. Date ....

Note / Remarks..

बिहारी ने निति और ज्ञान के भी दोहे लिखे है किंतु उनकी संख्या बहुत थोडी है। धन-संग्रह के संबध मे दोहा देखिए।

मति न नीति गलीत यह जोधन धरिये जोर। खाय खर्चे जो बचे तो जोरिये करोर॥

प्रकृति चित्रण

प्रकृति चित्रण में बिहारी किसी से पीछे नही रहे है, षट ऋतुओ का उन्होंने बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है। ग्रीष्म ऋतु का चित्र देखिए -

कहलाने एकत बसत अहि मयुर मृग बाघ। जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ।

बिहारी गाव वालो कि अरसिकता करते हुए कहते है।

कर फुलेल को आचमन मिठो कहत सराहि। रे गन्ध मतिहीन यह अतर दिखावत काहि॥

Subject .... Date ....

Note / Remarks ....

बहुज्ञता।

बिहारी को ज्योतिष वैद्यक गणित विज्ञान आदि विविध विषयों का ज्ञान था। अतः उन्होंने अपने दोहों में अनेक का खूब उपयोग किया है। गणित संबंधी तथ्य की परिपूर्णता देखिए।

कहत सबै बेंदी दिये आँक दस गुनो होतु।
तिय लिलार बेंदी दिये अगिनित बढ़त उदोतु।।

भाषा

बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। इसमें सूर की चलती ब्रजभाषा का विकसित रूप मिलता है। पूर्वी, बुंदेलखंडी, उर्दू, फारसी आदि के शब्द भी उसमें आये हैं, किंतु खटकने वाले नहीं हैं। बिहारी ने अपनी भाषा में कहीं-कहीं मुहावरों का भी सुंदर प्रयोग किया है। जैसे

Subject

Note / Remarks

मूड चलोके रहे करयों वीठि क्या भरन रहे मिरे परि राखिवे तक दियेपर हरन ।।

शैली

विषय के अनुसार बिहारी की शैली तीन प्रकार की है।

1. माधुर्य पूर्ण व्यंजना प्रधान शैली - श्रृंगार के दोहो मे।

2. प्रसादगुण से युक्त सरस शैली - भक्ति तथा नीति के दोहो मे।

3. चमत्कार पूर्ण शैली - दर्शन, ज्योतिष गणित आदि विषयक दोहो मे

शब्दों का प्रयोग भावों के अनुकूल ही हुआ है और उनमे एक भी शब्द भरती का प्रतीत नहीं होना।

Subject......................
Note / Remarks...................... Date ....

रस

यदयपि बिहारी के काव्य में शान्त हास्य करुण आदि रसों के भी उदाहरण मिल जाते है, किन्तु मुख्य रस श्रृंगार ही है।

छंद

बिहारी ने केवल दो ही छंद अपनाए हैं दोहा और सोरठा, दोहा छंद की प्रधानता है। बिहारी के दोहे समास शैली के उत्कृष्ट नमूने हैं।

अलंकार

अलंकारों की कारीगरी दिखाने में बिहारी बड़े पटु हैं। उनके प्रत्येक दोहे में कोई अलंकार अवश्य आ गया है।

* स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा देखु
* विहंग विचारि। बाजि पराये पानि परि तू पच्छीनु न मारि
* बाज पराये पानि
* मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ
* जा तन की झांई परे स्याम हरित दुति होय
* हरित दुति होय

Subject.........

Note / Remarks.........

Date ....

साहित्य में स्थान

किसी कवि का यश उसके द्वारा रचित ग्रंथों के परिमाण पर नहीं गुण पर निर्भर होता है। बिहारी के साथ भी यही बात है। अकेले सतसई ग्रंथ ने उन्हें हिंदी साहित्य में अमर कर दिया। श्रृंगार रस के ग्रंथों में बिहारी सतसई के समान ख्याति किसी को नहीं मिली।